ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

भारतीय विदेश नीति के बदलते आयाम

Changing Dimensions of Indian Foreign Policy

Paper Submission: 05/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

इन्द्रेश कुमार
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
दिग्विजयनाथ पी0 जी0 कालेज, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

स्वतंत्रता से अब तक भारतीय विदेश नीति विभिन्न चरणों से गुजरती हुई परिपक्वता के चरण तक पहुंची है। वर्तमान में भारत अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के निदान में प्रमुख देश के रूप में उभरा है। वर्तमान विदेश नीति में पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है। भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हुआ है। बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है। भारत अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाने का प्रयत्न भी कर रहा है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती एक तेजी से बदलते गतिशील, जटिल और बहुध्रुवीय विश्व में नीति के उपकरणों के सही मिश्रण को अवधारित करना है।'

Indian foreign policy has passed through various phases since independence and has reached a stage of maturity. Presently India has emerged as a major country in international relations and solution of international problems. In the current foreign policy, the tendency to take risk has increased as compared to all the earlier policies. India has moved towards a somewhat aggressive policy, changing its decades-old protective policy. In the changing global political environment, India is limiting its dependence on any formal group for the fulfillment of its economic and political interests. India is also trying to strike a balance in its foreign policy. The biggest challenge we face today is to determine the right mix of policy tools in a rapidly changing dynamic, complex and multipolar world.

मुख्य शब्द : अंतर्राष्ट्रीय, गुटनिरपेक्षता, विदेश नीति, सन्तुलन, सीमा–विवाद, वैश्विक, बहुपक्षवाद।

International, non-alignment, foreign policy, balance, border dispute, global, multilateralism.

प्रस्तावना

आधुनिक युग अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राष्ट्रों की पारस्परिक अन्तर्निर्भरता आज अतिआवश्यक हो गयी है। आज विश्व के सभी देश अपने–अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति व उनमें संवर्द्धन के लिए प्रयासरत हैं। प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विदेश सम्बन्धों में स्वतंत्र विदेश नीति का प्रयोग करता है। किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति प्रमुख रूप से कुछ सिद्धान्तों, हितों एवं उद्देश्यों का समूह होती है, जिनके माध्यम से वह राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित करके उन सिद्धान्तों की पूर्ति करने का प्रयास करता है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति अपनायी और अपने स्वतंत्र व राष्ट्रीय हितों को अन्तर्राष्ट्रीय हितों से सामंजस्य स्थापित करने का निरन्तर प्रयास कर रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वतंत्रता से अब तक भारतीय विदेश नीति में आए बदलावों की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए वर्तमान वैश्विक चुनौतियों में एक उपयुक्त नीति का अवलम्बन करने की आवश्यकता को समझा गया है।

भारत की विदेश नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए पं0 जवाहरलाल नेहरू ने सितम्बर, 1946 में एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था कि ''वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करेगा और गुटों की खींचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशों को आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान कराने तथा जातीय भेदभाव की नीति का दृढ़तापूर्वक उन्मूलन कराने का प्रयत्न करेगा। साथ ही वह दुनिया के शान्तिप्रिय राष्ट्रों के साथ

मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के प्रसार के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।'' नेहरू का यह कथन आज भी भारतीय विदेश नीति का आधार–स्तम्भ है। भारत की विदेश नीति की मूल बातों का समावेश हमारे संविधान के अनुच्छेद–51 में किया गया है, जिसके अनुसार राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देगा, राज्य राष्ट्रों के मध्य न्याय और सम्मानपूर्वक सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रयत्न करेगा, राज्य अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों तथा सन्धियों का सम्मान करेगा तथा राज्य अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को पंच फैसलों द्वारा निपटाने की रीति को बढ़ावा देगा। प्रारम्भ में भारतीय विदेश नीति को पंचशील सिद्धान्तों ने एक नयी दिशा प्रदान की। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर 29 अप्रैल, 1954 को भारत–चीन सम्बन्धों में इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया। आलोचकों ने भारत–चीन सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में पंचशील को असफल सिद्धान्त बताया। शीत युद्ध के बाद गुटनिरपेक्षता के माध्यम से राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति करने तथा विदेश सम्बन्ध मधुर बनाने का कार्य किया गया। नेहरू ने कोरिया संकट, हिन्द–चीन संघर्ष तथा स्वेज नहर संकट को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के मंच पर एशिया और अफ्रीका के देशों को एकत्र करने में सफलता प्राप्त की। नेहरू ने भारतीय विदेश नीति को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान दिलाया और अमेरिका तथा रूस दोनों से ही आर्थिक सहायता प्राप्त करने में सफलता पायी।

नेहरू जी के बाद भारतीय विदेश नीति का संचालन लालबहादुर शास्त्री जी ने किया। उन्होंने नेहरू की आदर्शवादी नीति और यथार्थवाद में सुन्दर समन्वय किया। उन्होंने पाकिस्तान, इण्डोनेशिया तथा चीन की भारत विरोधी मैत्री को ध्यान में रखकर विदेश नीति और रक्षा नीति का निर्धारण किया। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा को विशेष महत्व देकर भारत की विदेश नीति को यथार्थवादी बना दिया। उन्होंने महाशक्तियों के साथ सम्बन्ध सुधारने तथा गुट निरपेक्षता की बजाए दक्षिण एशिया के तथा अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने पर बल दिया। उन्होंने 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में रक्षा विभाग व सेना को स्वतंत्र नीति निर्धारण करने का अधिकार देकर विजयश्री को सम्भव बनाया। इस युद्ध में भारत की विजय ने भारत की विदेश नीति का खोया हुआ अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मान वापस दिलाया। इस युद्ध में भारत के विदेश नीति की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि अमेरिका ने पाकिस्तान को दी जाने वाली आर्थिक एवं सैनिक सहायता बन्द कर दी और ताशकन्द समझौते के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में रूस ने भारत का ही पक्ष लिया।

शास्त्री जी के बाद इन्दिरा गांधी ने भारतीय विदेश नीति का संचालन किया। उन्होंने नेहरू जी की विदेश नीति को मजबूत करने एवं कूटनीति का विदेश नीति में प्रयोग करने का व्यवहारिक कदम उठाया। 1971 में गुटनिरपेक्षता की अवधारणा की सीमाओं की चिन्ता किये बिना सोवियत संघ से मैत्री सन्धि की और 1971 के भारत–पाक युद्ध में बांग्लादेश को स्वतंत्र देश के रूप में कूटनीतिक सफलता प्राप्त हुई। बांग्लादेश की मान्यता, अमेरिका के प्रति दृढ़ता और सोवियत संघ के साथ मैत्री सम्बन्ध बनाकर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा की। उन्होंने शिमला–समझौते द्वारा भारत की विदेश नीति की आदर्शवादिता बरकरार रखी तथा वियतनाम व कम्बोडिया के मुक्ति आन्दोलन को पूर्ण समर्थन दिया। अपनी सुरक्षा को मजबूती प्रदान करने के लिए 1974 में पोखरण परमाणु परीक्षण भी किया। उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ व्यवहारिकता को अपनाया। गुटनिरपेक्षता को महान आन्दोलन में परिवर्तित किया और पश्चिम की आर्थिक सहायता को कम करने का प्रयास किया। उन्होंने हिन्द–महासागर को शान्ति का क्षेत्र घोषित कराकर कूटनीतिक सफलता प्राप्त की। उनके कार्यकाल में चीन, वर्मा, ईरान, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश व सोवियत संघ आदि देशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित हुए।

श्रीमती गांधी के बाद मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमंत्री बने और विदेश नीति के संचालन में अटल बिहारी बाजपेयी की मुख्य भूमिका रही। उन्होंने गुटनिरपेक्षता को वास्तविक आधार प्रदान करने का प्रयास किया और भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धान्तों का पालन किया। उन्होंने दोनों शक्ति गुटों तथा पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने पर विशेष बल दिया। चीन के साथ सीमा विवाद को हल करने का प्रयास, पाकिस्तान के साथ मधुर सम्बन्ध बनाने की दिशा में कुछ सफलता इस अल्पकाल में मिली। सोवियत संघ से सम्बन्ध अच्छे रहे। अमेरिका व पश्चिमी देशों का अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाया। इन्दिरा गांधी के दूसरे कार्यकाल में पुरानी विदेश नीति को ही अपनाया गया। भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध सुधारने के प्रयास निरर्थक साबित हुए। इन्दिरा गांधी की अमेरिका यात्रा से भारत के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण बदला। सोवियत संघ से सम्बन्ध ठीक रहे। संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न संस्थाओं में भारत ने प्रतिनिधित्व किया। फ्रांस से भारत को तारापुर परमाणु ऊर्जा केन्द्र के लिए यूरेनियम प्राप्त हुआ। भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का नेतृत्व किया।

इन्दिरा गांधी के बाद राजीव गांधी ने भारतीय विदेश नीति का संचालन किया। उन्होंने भारतीय विदेश नीति के परम्परागत आधारों को कायम रखा। एफ्रो–एशियाई राष्ट्रों तथा गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में गहरी रुचि रखने वाले राष्ट्रों के साथ मित्रवत् सम्बन्ध स्थापित हुए। सोवियत संघ व अमेरिका के साथ सम्बन्धों को सुधारने का प्रयास किया। राजीव गांधी ने यात्रा की कूटनीति अपनायी और विश्व के अनेक नेताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किये। उन्होंने दक्षिण एशिया में भारत का वर्चस्व स्थापित करने पर अधिक जोर दिया। मालद्वीव में सैनिक क्रान्ति को विफल करने तथा श्रीलंका में जातीय संघर्ष को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। नामीबिया की स्वतंत्रता, दक्षिण अफ्रीका के नीतियों का विरोध एवं नेल्सन मंडेला को जेल से रिहा करने की पुरजोर अपील की। पाकिस्तान, चीन व बांग्लादेश से सम्बन्ध अच्छा करने का प्रयास किया। उन्होंने निःशस्त्रीकरण पर भी जोर दिया।

राजीव गांधी के बाद वी0पी0सिंह के नेतृत्व में सरकार बनी और इन्द्र कुमार गुजराल ने विदेश नीति का

संचालन किया। उन्होंने कुवैत से भारतीयों को सुरक्षित वापस लाकर और श्रीलंका से शान्ति सेना वापस बुलाकर सफल विदेश नीति का परिचय दिया। पाकिस्तान, बांग्लादेश के साथ सम्बन्ध सुधारने एवं नवोदित नामीबिया के साथ मैत्री कायम की। वी0पी0 सिंह के बाद चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने। उन्होंने खाड़ी युद्ध के समय अमेरिकी विमानों को ईंधन भरने की दी जाने वाली सुविधा रोक दी। कुवैत पर इराक के आक्रमण की निन्दा की। चीन से सम्बन्ध ठीक करने के लिए एक व्यापारिक शिष्टमण्डल भेजा। पाकिस्तान, नेपाल के साथ भी सम्बन्ध ठीक करने के प्रयास किये।

चन्द्रशेखर के बाद पी0वी0 नरसिंहा राव के काल में भारतीय विदेश नीति में विशिष्ट परिवर्तन दिखाई देता है। आर्थिक आवश्यकताओं के सन्दर्भ में भारत अपनी आधारभूत गुटनिरपेक्षता की नीति कायम रखते हुए विदेश नीति का संचालन किया। सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाते हुए अमेरिका, पाश्चात्य देशों, जापान व कोरिया जैसे राष्ट्रों को भारत में पूँजी निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने तथा भारत में पूँजी निवेश को बढ़ावा देने की नीति अपनायी। भारत–अमेरिका आर्थिक सम्बन्धों की नयी शुरुआत तथा इजराइल के साथ भारत की नवीन साझेदारी स्थापित हुई। भारत ने भूटान, बांग्लादेश, पुर्तगाल, स्पेन, जर्मनी व फ्रांस के साथ सम्बन्ध सुधारने का प्रयास किया। इस समय एन0पी0टी0, सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर न कर राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करने में भारतीय विदेश नीति सफल रही। प्रधानमंत्री एच0डी0 देवगौड़ा के शासनकाल में इन्द्र कुमार गुजराल ने विदेश नीति का संचालन किया। इस काल में भारत में आर्थिक उदारीकरण के लिए विदेश नीति में कुछ परिवर्तन किये गये। खुली अर्थव्यवस्था एवं बाजार मूल्य प्रणाली को भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया और अमेरिका के साथ बेहतर सम्बन्धों को प्राथमिकता दी गयी। इन्द्र कुमार गुजराल ने ''गुजराल सिद्धान्त'' का प्रतिपादन करके अपने पड़ोसी देशों के साथ बेहतर सम्बन्धों को प्रमुखता दी। भारत ने रूस, चीन, श्रीलंका व इजराइल आदि देशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। बांग्लादेश के साथ गंगाजल बंटवारे का प्रश्न हल किया गया। चीन के साथ सीमा–विवाद भूलकर सम्बन्ध सुधारने का प्रयत्न किया गया। भारत ने सी0टी0बी0टी0 जैसी विभेदकारी परमाणु नीति पर दबाव न स्वीकार करते हुए हस्ताक्षर नहीं किया। एच0डी0 देवगौड़ा के बाद इन्द्र कुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने और विदेश नीति का संचालन किया। पाकिस्तान तथा पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा में आतंकवाद को समाप्त करने का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आह्वान किया। गुटनिरपेक्षता और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति पर चलते हुए दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस समय भी भारत किसी दबाव में न आकर सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर नहीं किया।

गुजराल के बाद भारतीय विदेश नीति का संचालन अटल बिहारी बाजपेयी ने किया। उन्होंने गुजराल सिद्धान्त से दो कदम आगे बढ़कर सभी पड़ोसी देशों के साथ सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों को प्राथमिकता दी। राष्ट्र की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 1998 में परमाणु परीक्षण किये। यद्यपि विश्व समुदाय ने इसकी निन्दा की तथापि भारत बिना किसी दबाव के स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन किया। भारत ने समसामयिक आधार पर पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की पहल की और लाहौर घोषणा–पत्र पर हस्ताक्षर किये। इससे पर्यटन, रेल, बस व हवाई सेवायें प्रारम्भ हुईं परन्तु 1999 में कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके पाकिस्तान ने भारत के शान्ति प्रयासों को चुनौती दी, भारत ने कारगिल विजय की। 2001 में पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों ने संसद पर हमला किया इससे दोनों देशों के सम्बन्धों में कटुता आयी परन्तु 2002 में भारत ने पाकिस्तान के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध कायम करने की दिशा में लाहौर बस सेवा प्रारम्भ की। इस दौरान भारतीय विदेश नीति को नया आयाम देते हुए बाजपेयी ने इण्डोनेशिया, वियतनाम, जापान, आस्ट्रेलिया, मलेशिया, सिंगापुर, अमेरिका व थाईलैण्ड के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित किये। इस काल में भी भारत ने सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर नहीं किया।

वाजपेयी के बाद डॉ0 मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने। इन्होंने विदेश नीति के तहत पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध बनाने के प्रयास किये। भारत ने आसियान व यूरोपीय संघ से भी मधुर सम्बन्ध स्थापित किया। पाकिस्तान के साथ अमृतसर–लाहौर बस सेवा, अमृतसर–ननकाना बस सेवा एवं पाकिस्तान के राष्ट्रपति की भारत यात्रा मधुर सम्बन्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। चीन के साथ सीमा विवाद हल करने एवं मुक्त व्यापार सम्बन्ध को धीरे–धीरे बढ़ाने का प्रयास किया गया। चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा भी सम्बन्धों को मजबूत बनाने में सहायक बनी। अमेरिकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा एवं अमेरिका से विमान एवं तकनीकी सहायता प्राप्त करने का प्रस्ताव भारत–अमेरिकी सम्बन्धों को मधुर बनाया। भारत रूस से तारापुर एवं नये परमाणु संयंत्रों के लिए परमाणु ईंधन आपूर्ति पर सहमति प्राप्त किया तथा आसियान से मुक्त व्यापार समझौते की दिशा में अहम कदम उठाये। भारत यूरोपीय–संघ के साथ गैलीलियो उपग्रह नेवीगेशन प्रणाली में भी भाग लिया।

डॉ0 मनमोहन सिंह के बाद नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने। इन्होंने प्रथम पड़ोस की नीति अपनायी और पड़ोसी देशों के साथ बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए ''गुजराल सिद्धान्त'' को प्रभावी रूप से लागू करने का प्रयास किया। अपने प्रथम शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) के राष्ट्राध्यक्षों और मारीशस के प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया तथा भूटान जैसे छोटे देश से अपनी विदेश यात्रा की शुरुआत की। मंगोलिया की यात्रा करने वाले पहले प्रधानमंत्री मोदी बने। उन्होंने 2018 के गणतंत्र दिवस में आसियान देशों को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया तथा भारत आसियान सम्बन्धों को सुदृढ़ करने के

लिए पूर्व की ओर देखो की नीति के स्थान पर 'एक्ट ईस्ट पालिसी' को लागू किया। एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के अनेक देशों की यात्रा कर एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर बदलती विदेश नीति का संकेत दिया। भारत पाकिस्तान सम्बन्धों में काफी उतार–चढ़ाव रहा है। प्रारम्भ में पाकिस्तान के साथ काफी गर्मजोशी दिखाई पड़ी लेकिन बाद में पिछली सरकारों की तरह सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गये हैं। पाकिस्तान को दिया गया 'मोस्ट फेवरेट नेशन' का दर्जा वापस लेने की बात बदलती विदेश नीति का ही परिणाम है। बांग्लादेश के साथ काफी पुराना सीमा विवाद का शान्तिपूर्ण निपटारा हुआ है।

वर्तमान में भारत, अमेरिका एवं रूस जैसी महाशक्तियों की तरफ एक साथ दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है। एक ओर विदेशी नीति में संतुलन लाने की कोशिश कर रहा है तो दूसरी ओर पड़ोसी देशों के साथ अपने रिश्तों को सुधारने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। हाल के वर्षों में चीन की दखल से भारत की पकड़ कमजोर हुई है। नेपाल और श्रीलंका के साथ भारत के रिश्तों में दरार चीन का बढ़ता वर्चस्व ही है। मालद्वीव में मालद्वीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी के सत्ता में आने से भारत के साथ तनाव में कमी आयी है। भारत चीन की महत्वकांक्षी बेल्ट एण्ड रोड इनीशिएटिव खासकर चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा योजना का विरोध कर छोटे एवं गरीब देशों को आर्थिक उपनिवेश बनने से रोका है। इण्डो–पैसेफिक क्षेत्र में चीन भारत की स्थिति को स्वीकार नहीं करता। भारत ने हिन्द–प्रशान्त महासागर में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान (क्वाड) के साथ मिलकर सुरक्षा संवाद को बढ़ाया है। चीन से व्यापार संतुलन एवं अनसुलझे सीमा विवाद भी है जिसने डोकलाम एवं गलवान घाटी सैनिक झड़प जैसी स्थितियाँ पैदा की है। भारतीय प्रधानमंत्री एवं चीनी राष्ट्रपति ने शान्तिपूर्ण ढंग से मतभेदों को दूर कर स्थिर, संतुलित सम्बन्ध बनाने तथा द्विपक्षीय सम्बन्धों का उचित प्रबंधन करने के लिए 'वुहान स्पिरिट' तथा 'चेन्नई कनेक्ट' के रूप में प्रयास किया। मोदी सरकार आने के बाद भारत जापान सम्बन्ध लगातार बढ़ रहे हैं। दोनों देश चीन के खिलाफ संतुलन की नीति, आर्थिक सहयोग, तकनीकी सहयोग, बहुपक्षवाद के विकास, स्वतंत्र एवं मुक्त हिन्द महासागर जैसे अनेक मुद्दों पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती आक्रामकता का मुकाबला दोनों देश मिलकर करने के लिए तत्पर हुए। हाल ही में भारत, जापान और आस्ट्रेलिया ने भारत–प्रशान्त क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखला में चीन के प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए औपचारिक रूप से सप्लाई चेन रेजीलिएंस इनीशिएटिव (एस0सी0आर0आई0) की शुरुआत की है।

भारत अमेरिका सम्बन्धों में बदलाव मोदी की विदेश नीति का हिस्सा रहा है। आर्थिक, रक्षा, तकनीकी, ऊर्जा, हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र, परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का अमेरिकी सहयोग व समर्थन प्राप्त हुआ है। कोविड–19 महामारी काल में भी भारत की मेडिकल डिप्लोमेसी अमेरिका को काफी प्रभावित की है जिससे अमेरिका का बेहतर सहयोग प्राप्त हुआ है। भारत अमेरिका के बीच लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरैंडम आफ एग्रीमेंट, संचार संगतता और सुरक्षा समझौता, साइबर सुरक्षा समझौता एवं आतंकवाद विरोध पर द्विपक्षीय बैठक, यू0एस0 एजेन्सी फार इण्टरनेशनल डेवलपमेंट और विकास भागीदारी प्रशासन साझेदारी व क्वाड जैसे अनेक कार्य दोनों देशों को नजदीक लाया है। अफगानिस्तान समस्या के मुद्दे पर भारत तालिबान की प्रत्यक्ष भूमिका के विपरीत स्थानीय लोकतांत्रिक सरकार और मूलभूत सुविधाओं में सहयोग के माध्यम से शान्ति समाधान चाहता है। भारत–रूस सम्बन्धों में भी बदलाव आया है। दोनों देशों के सम्बन्ध उतने अच्छे नहीं है जितने शीत युद्ध में हुआ करते थे। रूस भारत का बहुपक्षीय मंचों पर समर्थन करता है। रूस आतंकवाद, चीन की आक्रामकता के खिलाफ संतुलन बनाने में तथा आर्थिक, सामरिक मुद्दों पर भारत के साथ खड़ा है। ब्रिक्स, आर0आई0सी0, जी–20, पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन, शंघाई सहयोग सहित अनेक बहुपक्षीय संगठनों के सदस्य के रूप में रूस भारत के साथ है। हाल के दिनों में इजराइल–फिलीस्तीन संघर्ष में भारत फिलीस्तीन का समर्थन करके अपने राष्ट्रीय हितों का संरक्षण किया है। यद्यपि जनभावना इजराइल के पक्ष में दिखाई देती है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता से अब तक भारतीय विदेश नीति विभिन्न चरणों से गुजरती हुई परिपक्वता के चरण तक पहुंची है। वर्तमान में भारत अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के निदान में प्रमुख देश के रूप में उभरा है। वर्तमान विदेश नीति में पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है। भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हुआ है। बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है। भारत अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाने का प्रयत्न भी कर रहा है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती एक तेजी से बदलते गतिशील, जटिल और बहुध्रुवीय विश्व में नीति के उपकरणों के सही मिश्रण को अवधारित करना है। इसके अतिरिक्त एक राष्ट्र के रूप में, हमे उस स्थिति में भी बाहरी सम्बन्धों को बनाये रखने की आवश्यकता है। जब हमारा वैश्विक दृष्टिकोण विस्तारित हो रहा है तो आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश की निगरानी तथा उस पर प्रतिक्रिया दी जाये। जहां तक सम्भव हो अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश का निर्माण किया जाये ताकि भारत के राष्ट्रीय हित को एक प्रबुद्ध तरीके से साधा जा सके। भारत जैसे एक विशाल, वैविध्यपूर्ण और चुनौतीपूर्ण देश के लिए संतुलन की कला न केवल विदेश नीति प्रबंधन के लिए केन्द्रीय स्थान रखती है बल्कि सरकार के लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीक्षित जे0एन0 : ''भारतीय विदेश नीति'', प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2003
2. जौहरी ज0सी0 : ''विश्व राजनीति के बदलते आयाम'', जालंधर, 2008
3. पंत पुष्पेश और जैन श्रीपाल : ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1997–2007
4. नंदा बी0आर0 (सम्पादित) : ''इंडियन फारेन पालिसी, द नेहरू इयर्स'', रेडियन्ट पब्लिशर्स नई दिल्ली, 1990
5. नायर कुलदीप : ''इण्डिया द क्रिटिकल ईयर'', विकास पब्लिशिंग हाउस, 1971
6. महाजन बी0डी0 : ''इण्टरनेशनल रिलेशन्स'', एस चन्द एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली 1980
7. मिश्रा के0पी0 : ''फारेन पालिसी'', थॉमसन प्रेस इण्डिया लि0 नई दिल्ली, 1977
8. अग्रवाल एवं पनसानिया : ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध नवीन परिप्रेक्ष्य'', आस्था प्रकाशन जयपुर, 2010
9. गहलोत बी0 सिंह : ''भारत की विदेश नीति'', अर्जुन पब्लिक हाउस नई दिल्ली 2004
10. घई यू0 आर0 : ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'', जालन्धर, 2008
11. वर्मा दीनानाथ : ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', ज्ञानदा प्रकाशन पटना, 1980
12. www.bbc.com. सचिन गोगोई द्वारा उद्धृत, 12 अप्रैल, 2020
13. www.mea.gov.in एअर मार्शल डी0 चौधरी द्वारा उद्धृत, मई 15, 2020
14. www.icwa.in डॉ0 विवेक मिश्रा द्वारा उद्धृत, 20 अप्रैल, 2020